# UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 2 अपना स्थान स्वयं बनाइए (मंजरी)

**पाठका सर (सारांश)**

एक बार एक राजा ने अपने मंत्री से कहा कि मुझे एक आदमी की जरूरत है। अगर तुम्हें कोई अच्छा आदमी मिले तो मेरे पास लेकर आना। मंत्री को काफी खोजबीन के बाद एक युवक मिला जो एक जगह अच्छी नौकरी कर रहा था। मंत्री ने उसकी नौकरी छुड़वाकर और तरक्की का आश्वासन देकर उसे राजा के सामने पेश किया। लेकिन राजा को मंत्री की कही बात याद नहीं थी। कुछ देर बाद राजा बोले कि शायद उस समय मेरे मन में कोई बात रही हो, लेकिन अभी तो मुझे किसी आदमी की जरूरत नहीं है। तब मंत्री ने राजा से कहा कि महाराज इसे मैंने हजारों में से चुना है और मैं इसे अच्छी नौकरी छुड़वाकर लाया हूँ। राजा ने कुछ सोचकर मंत्री से कहा कि इस समय तो मेरे पास कोई काम नहीं है लेकिन अगर तुम कहते हो तो हम इसे अपने दफ्तर में चपरासी रख सकते हैं लेकिन इसे पंद्रह रुपये वेतन मिलेगा। राजा की यह बात मंत्री को बहुत बुरी लगी लेकिन वह युवक खुश था।

उसने मंत्री को धन्यवाद देते हुए कहा कि, मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि मुझे अपने राजा की सेवा करने का मौका मिला। मंत्री जब उस युवक को राजा के दफ्तर छोड़ने गया तो दफ्तर की हालत देखकर मंत्री बहुत परेशान हुआ क्योंकि दफ्तर में चारों तरफ धूल और गंदगी थी। राजा कभी अपने दफ्तर नहीं जाता था और न ही वहाँ बैठकर कोई काम करता था। युवक कई दिनों तक राजा के दफ्तर में सफाई करता रहा। राजा के उस दफ्तर में एक कमरा था जिसमें राजा को मिले अनेक कीमती उपहार कबाड़ के रूप में रखे हुए थे। उस युवक ने उन कीमती उपहारों का कबाड़ निकालकर बाज़ार में बेच दिया। उसे कई. हज़ार रुपये मिले। उन् रुपयों से उस युवक ने दफ्तर के लिए अच्छे फर्नीचर के साथ-साथ अन्य जरूरी सामान खरीदे।

उसने अपने मेहनत से कुछ ही दिनों में उस दफ्तर को शाही दफ्तर का रूप दे दिया। बचे पैसों को उसने सरकारी खजाने में जमा करा दिया। तभी कुछ चुगल खोरों ने राजा से उसकी शिकायत कि वह रुपये लुटा रहा है। एक दिन राजा गुस्साए हुए दफ्तर गए तो दफ्तर देखकर दंग रह गए। राजा ने उससे पूछा कि, दफ्तर की सजावट तुमने किसके पैसे से किया है। उसने राजा को ऑफिस के कबाड़ी की सारी कहानी बताई और यह भी बताया कि बचे हुए रुपयों को उसने सरकारी खजाने में जमा करा दिया है। राजा उस युवक से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे अपने राज्य का वित्त मंत्री बना दिया। उसके वित्त मंत्री बनने से दूसरे मंत्रियों को परेशानी होने लगी क्योंकि वह न तो स्वयं बेईमानी करता था न ही किसी मंत्री को बेईमानी करने देता था।

अब जो मंत्री राजा के पास जाता वो राजा से उस युवक की कुछ न कुछ शिकायत करता, जिससे वह राजा की मजरों में गिर जाए। एक दिन रात को दो बजे राजा ने अपने सेनापति को बुलाकर कहा कि हमारे सभी मंत्रियों को इसी समय वे जिस हालत में हों, उन्हें उनके घरों से लाकर मेरे सामने पेश करो। कुछ ही देर में सभी मंत्री राजा के सामने थे। वित्त मंत्री को छोड़कर सभी मंत्रियों ने शराब पी रखी थी। सेनापति ने राजा को बताया कि वित्त मंत्री अपने घर पर रात में जगकर खजाने का हिसाब किताब जोड़ रहे थे और बाकी मंत्री जुआ खेल रहे थे। राजा ने उस युवक से खुश होकर उसे वित्त मंत्री से अपने राज्य का प्रधानमंत्री बना दिया।

https://www.evidyarthi.in/